

2, 73, Sch. mit dem loc.: रुद्रैकादशके ऽधिकं मूर्त्यष्टकाच्चिद्वं ध्यायन् Vor. 5, 34. Wird mit dem verglichenen Gegenstande bisweilen auch componirt: सर्वदानाधिकं यस्मात्प्रज्ञानां परियालनम् JĀG. 1, 334. तद्दिनं वर्ष-शताधिकमिव (länger als ein Jahrhundert) जगाम Vrt. 10, 16. प्राणाधिक AMAR. 69. आत्माधिका KATHĀS. 15, 23. Hierher gehört wohl auch R. 1, 23, 10: एष विप्रकुवन्धर्म एष वीर्यवतो वरः । एष बुद्धाधिको लोके तप-सश्च परायणम् ॥ Zum Ueberfluss erhält अधिक noch die Endung des compar.: क्लेशो ऽधिकतरस्तेषाम् BHAG. 12, 5. स्वर्गादधिकतरं निर्वृत्तिस्थानम् ÇĀK. 100, 17. — e) dem Maasse nach niedriger stehend, kleiner u. s. w. अधिको द्रोणः खार्याः (= अधिको खारी द्रोणेन die Kh. ist grösser als der Dr.) P. 5, 2, 73, Sch.; vgl. 1. अधि 2, d, 3 am Ende. — Vgl. अधिकम् und अग्रधिक. — 2) n. a) Ueberschuss: लाभो ऽधिकं फलम् AK. 2, 9, 80. H. 869. वर्षशते साधिके BRAHMA-P. in LA. 56, 5. — b) Hyperbel SĀH. D. 349, 14.

अधिकत्व (von अधिक) n. das Ueberwiegen, Vorherrschen: न पाकमाया-त्ति कपाधिकत्वान्मेदोऽधिकत्वाच्च Suçr. 1, 288, 12.

अधिकम् (von अधिक) adv. (im comp. ohne Flexionsendung) 1) mehr als gewöhnlich, überaus, sehr: अधिकं मलिनम् N. 16, 18. R. 5, 18, 22. अधिकमनोज्ञा ÇĀK. 19. ०सुरभि MEGH. 21. ०विकल DHŪRTAS. 72, 12. अधिकं मूर्ध्निशोभत R. 5, 67, 4. अधिकं कौश RAGH. 4, 1. यस्मिन्नेवाधिकं चतुररेष्यति पार्थिवः PAÑĀT. I, 273. — 2) mehr, stärker: अधिकं कौश RAGH. 3, 18. ततो ऽप्यधिकद्वयितान् M. 10, 29. शतगुणाधिकम् mehr als 100 Mal HIR. 4, 49. = अधिकतरम्: अधिकतरमिदानीं राजते राजलक्ष्मीः VIKR. 160.

अधिकमास (अधिक + मास) m. ein überschüssiger Monat, Schälmonat ÇKDR. u. अधिमास; vgl. d. W.

अधिकरण (von कर् with अधि) n. 1) Bezug, Beziehung: अथातः संक्षि-ताया उपनिषदं व्याख्यास्यामः । पञ्चस्वधिकरणेषु । अधिलोकमधिष्ठेयोति-षमधिविषयमधिप्रज्ञमध्यात्मम् TAITT. UP. 1, 3, 1. स सूतस्तत्र शुश्राव रामा-धिकरणाः (auf Rāma bezügliche) कथाः R. 2, 18, 29. तत्पुरुषः समानाधि-करणः कर्मधारयः P. 1, 2, 42. Ein Wort, das mit einem andern Worte in Congruenzverhältniss steht, ist mit diesem समानाधिकरण 2, 1, 49. 2, 11. 6, 3, 34. 8, 1, 73. एकाधिकरणे be einer Beziehung auf eine Einheit 2, 2, 1. ज्ञानाधिकरणमात्मा Z. d. d. m. G. VI, 25, N. 1 (MÜLLER: das Selbst ist ein Gegenstand, welcher das Substrat der Eigenschaft des Wissens ist). — 2) die Beziehungen des Locativs: आधारे ऽधिकरणम् P. 1, 4, 45. 2, 2, 13. 3, 36. 64. 68. 3, 4, 76. — 3) ein einem speciellen Gegenstande ge-widmeter Abschnitt, Artikel, Paragraph H. 255. So zerfallen die Sūtra Ġaimini's und Bādarāja's zunächst in Adhja's, die Adhja-ja's in Pāda's, die Pāda's in Adhikarāṇa's COLEBR. Misc. Ess. I, 297. 329. Verz. d. B. H. No. 606. — 4) Stoff, Materie P. 2, 4, 13. 15. 5, 3, 43. — 5) Gericht: स्वान्देशान्कथयन्ति नाधिकरणे MĀKĪH. 137, 14. 19. अधिकरणस्य मार्गमदेशय 143, 10; vgl. धर्माधिकरण. — Vgl. अधिकार.

अधिकरणमाण्डप (अधिकरण 5. + माण्डप) Gerichtshalle MĀKĪH. 138, 4. 143, 9.

अधिकरणीक (von अधिकरण) m. Gerichtsperson, Richter MĀKĪH. 137. figg. — Wohl schlechte Lesart für अधिकरणीक, wie die v. l. bietet. अधिकरणी f. von अधिकरण gaṇa गौरादि.

अधिकर्द्धि (अधिक + कर्द्धि) adj. überaus glücklich AK. 3, 1, 11.

अधिकर्मकर (1. अधि + कर्मकर) m. = अधिकर्मकृत् VIRAM. 125, a. — Vgl. शुश्रूषक.

अधिकर्मकृत् (1. अधि + कर्मकृत्) m. Oberaufseher über die Diener und Arbeiter NĀRADA in MIT. 267, 8. (= कर्म कुर्वतामधिष्ठाता ebend. 16.) VI- RAM. 123, b. — Vgl. शुश्रूषक.

अधिकर्मकृत (अधिकर्मन् + कृत) m. der die Oberaufsicht über Alles hat, Verwalter, Schaffner: सर्वेष्वधिकृतो यः स्यात्कुटुम्बस्य तत्रोपरि । सो ऽधि-कर्मकृतो ज्ञेयः स च कौटुम्बिकः स्मृतः ॥ NĀRADA in VIRAM. 125, a.

अधिकर्मन् (1. अधि + कर्मन्) n. Oberaufsicht; vgl. अधिकर्मिक und अ-धिकर्मकृत.

अधिकर्मिक (von अधिकर्मन्) m. Oberaufseher über den Markt H. 767.

अधिकर्त्तव्यन् adj. ein Ausdruck aus dem Würfelspiel, welcher wie कर्-त्तव्यन् eine verwerfliche Gewohnheit bezeichnet, vielleicht Uebervor- theiler, der zu dem ihm wirklich Zukommenden Etwas zufügt, VS. 30, 18; vgl. अधिदेवन.

अधिकषाष्टिक adj. von अधिकषष्टि (अधिक + षष्टि) mehr als 60 P. 1, 1, 23, Vārt. 4, Sch.

अधिकसाप्ततिक adj. von अधिकसाप्ति (अधिक + साप्ति) mehr als 70 P. 1, 1, 23, Vārt. 4, Sch.

1. अधिकाङ्ग (अधिक + 3. अङ्ग) n. eine Schürpe, die über die Brust weg auf dem Panzer getragen wird AK. 2, 8, 3, 31. H. 767 (nach den Sch. auch m.).

2. अधिकाङ्ग (wie eben) adj. f. ई ein überzähliges Glied habend M. 3, 8. Gegens. क्षीनाङ्ग PAÑĀT. V, 81.

अधिकार (von कर् mit अधि) m. 1) Oberaufsicht, Verwaltung, Amt: स्त्रीषु (über die Frauen des Königs) कष्टे ऽधिकारः VIKR. 42. यः पार्वेषा धर्माधिकारे (Rechtsverwaltung) नियुक्तः ÇĀK. 13, 23. अर्थधिकार die Ver-waltung der Gelder HIT. 61, 7. द्वीपिनस्ताम्बूलाधिकारः PAÑĀT. 63, 23. अविभ्रातो ऽयं लोकतन्त्राधिकारः ÇĀK. 60, 19. यः सर्वाधिकारे नियुक्तः प्र-धानमन्त्री स करोतु । यतो ऽनुजीविना पराधिकारचर्चा न कर्तव्या HIT. 49, 18. 19. तुल्योद्योगस्तव च सवितुश्चाधिकारो मतो नः VIKR. 20. तस्माद्वाह्य-णस्यैवाधिकारो न तु तन्त्रियस्य ITIH. bei ROSEN zu RV. 1, 18. ब्राह्मणः त-न्त्रियो बन्धुर्नाधिकारे प्रशस्यते HIT. II, 92. — 2) die Würde, die Stellung, die man im Leben einnimmt: कृताधिकारो मलिनम् — वासपेद्यभिचा-रिणाम् JĀG. 1, 70. अष्टाधिकार adj. PAÑĀT. 9, 19. दत्तिलम् — स्वाधिकारे नियोजयामास 30, 13. स्वाधिकारप्रमत्तो यतः MEGH. 1. — 3) die oberste Würde im Staate, das Herrscheramt: कणादायुष्मान्स्वाधिकारभूमौ वर्ति-ष्यते ÇĀK. 99, 6. अधिकारखेदं निवृत्त्य 61, 17. अधिकारेण संपदः die Güter, die von oben kommen, PAÑĀT. I, 312. ब्रह्मिष्ठमाधाय निजे ऽधिकारे RAGH. 18, 27. — 4) Berechtigung, Bethheiligung, Ansprüche, Befähigung: अथा-तो ऽधिकारः (Opferbefähigung, Sch.: स्वाम्यं फलभोक्तृत्वा कर्मणि ऐश्व-र्यम्) KĀTJ. Çr. 1, 1, 1. यावत्स्वमधिकारात् (Sch.: तासां देवके ऽधिकारो ऽस्ति यत्) 4, 2, 28. अधिकारविधि liturgische Bestimmung über die durch ein Opfer zu erlangenden Ansprüche MADHUSŪDANA in Ind. St. I, 14, 18. अधिकारविशेष specielle Bestimmungen darüber und über die Quali-fication zum Opfer ders. ebend. I, 19, 7. शूद्रो ऽधिकारहीनो ऽपि JĀG. 3, 262. mit dem loc.: तस्य शास्त्रे ऽधिकारो ऽस्मिन् ज्ञेयो नान्यस्य कस्यचित् M. 2. 16. नास्याधिकारो धर्मे ऽस्ति न धर्मात्प्रतिषेधनम् 10, 126. पुत्रस्य मा-